Padma Vibhushan



Shri Mohammed Yusuf Khan alias Dilip Kumar

Shri Mohammed Yusuf Khan alias Dilip Kumar, a renowned film actor, is known worldwide as a thespian and living legend.

2. Born on December 11, 1922 in Peshawar in the North Western Province of undivided India, Shri Dilip Kumar's family moved to Mumbai in the Thirties. After completing his studies and a six months stint as an assistant to the Canteen Manager in a British Army club in Poona, he returned to Mumbai and joined Bombay Talkies in 1942. He made his debut in 1944 in Jwar Bhata. Mrs Devika Rani of Bombay Talkies bestowed the screen name, Dilip Kumar on him.

3. From his very first film, Shri Dilip Kumar redefined the art of screen acting, eschewing the loud theatrical acting of the time, and created a style and benchmark of his own. He became the first super star of Indian Cinema as his starrers raked in phenomenal box office collections starting with Jugnu (1947), his first big hit followed by classic successes such as Shaheed, Amar, Shabnam and Aan, India's first Technicolor film. He worked in 62 films and all have acquired classic status in Indian Cinema. Indian cinema is now hundred years old and Dilip Kumar shines in its exalted firmament as a legendary star, who has given eight decades of his life to the nurturing and growth of Indian cinema.

4. Shri Dilip Kumar has always lived up to his beliefs. His secular beliefs have been translated into reality with his participation in religious functions of all communities and his loyal friendship with men and women from all religions. He has set the example to actors of his generation as well as succeeding generations to rise to the occasion when a national calamity or crisis struck. He spearheaded and managed several star cricket matches, star processions on the roads of Mumbai, live entertainment shows to collect aid for the victims of the calamities. He led the first artistes' troupe in the aftermath of the Indo China war to the border areas to entertain the jawans braving the bitter cold and loneliness to defend our country.

6. Shri Dilip Kumar worked tirelessly for ten years to bring light into the lives of the blind as the Chairman of the National Association of the Blind. Besides his personal donations, he raised funds every year to buy Braille books and other learning aids for the sightless students. He was also closely associated with the fund raising missions of the NASEOH (National Association of Society for Equal Opportunities For the Handicapped), the War Widows Association and many other noble causes such as the charities for the victims of conflict torn Bosnia, the Fatimid Foundation's blood donation centre in Peshawar, the Shaukat Khanum Memorial Trust's charitable hospital in Lahore and several charities in different countries and back home.

7. Shri Dilip Kumar presented the first proposal to the government of Maharashtra to give the film industry its own Film City and pursued the State government relentlessly to get the land allotted for the Film City. Likewise, he, along with the late Shri Rajni Patel, proposed the building of the Nehru Centre in Mumbai during his tenure as the city's sheriff so that Science and Art could come together on an equal platform under one roof in a city that celebrates both.

8. Shri Dilip Kumar has a number of awards and honours to his credit. He recieved Filmfare (Best Actor) award for Daag, Azaad, Devdas, Naya Daur, Kohinoor, Leader, Ram Aur Shyam and Shakti. He was also honoured with Padma Bhushan in 1991, Dada Saheb Phalke award in 1995; Nishan-E-Imtiyaz, the highest civilian award of Pakistan in 1997, Ramnath Goenka award in 1998 for contribution in the field of social welfare, Rajiv Gandhi Sadbhavana Award in 2000 for communal harmony and national integration etc.



श्री मोहम्मद युसूफ खान उर्फ दिलीप कुमार

श्री मोहम्मद युसूफ खान उर्फ़ दिलीप कुमार एक प्रख्यात फ़िल्म अभिनेता हैं, जो पूरे विश्व में एक महान कलाकार और अज़ीम हस्ती के तौर पर जाने जाते हैं।

2. आपका जन्म दिसम्बर 11, 1922 को अविभाजित भारत के उत्तर पश्चिमी प्रांत में पेशावर में हुआ। तीस के दशक के बाद आपका परिवार मुम्बई आ गया। तालीम पूरी करने तथा पुणे में 6 माह तक एक ब्रिटिश आर्मी क्लब में कैन्टीन मैनेजर के बतौर सहायक काम करने के बाद आप मुम्बई वापस आ गए और वर्ष, 1942 में बॉम्बे टॉकिज़ में शामिल हो गए। आपकी पहली फ़िल्म वर्ष,1944 में आई ज्वार-भाटा थी। बॉम्बे टॉकिज़ की श्रीमती देविका रानी ने आपको फ़िल्मी पर्दे पर प्रसिद्ध होने वाला नाम, दिलीप कुमार दिया।

3. अपनी पहली ही फ़िल्म से आपने समकालीन भड़कीले रंगमंचीय अभिनय को दरकिनार करते हुए, रूपहले पर्दे के अभिनय कला की परिभाषा फिर से लिखी और अपनी एक विशेष शैली गढ़ी और मानदंड स्थापित किया। आप भारतीय सिनेमा के पहले सुपरस्टार रहे हैं ,जिनकी फ़िल्में, जुगनूं (1947), जो आपकी पहली बड़ी सफल फ़िल्म थी, से लेकर आपकी अन्य फ़िल्मों तक, व्यवसायिक दृष्टि से बेहद सफल रहीं, जिसके साथ-साथ शहीद, अमर, शबनम और भारत की पहली टेक्निकलर फ़िल्म आन जैसी महान फ़िल्मों का भी दौर चलता चला गया। आपने 62 फ़िल्मों में अभिनय किया है और इन सभी फ़िल्मों को भारतीय सिनेमा के इतिहास की महान फ़िल्में होने का गौरव हासिल है। भारतीय सिनेमा का इतिहास अब सौ साल पुराना हो चला है जिसके क्षितिज पर आज भी आप सबसे प्रकाशमान तारे की भांति चमक रहे हैं और जिनके जीवन का लगभग आठ दशक का समय भारतीय सिनेमा की परवरिश तथा इसके विकास के प्रति समर्पित रहा है।

4. आपने अपना जीवन अपने उसूलों पर जीया है। आपकी धर्मनिरपेक्ष मान्यताएं, सभी समुदायों के धार्मिक कार्यक्रमों में आपकी भागीदारी तथा सभी धर्मों के लोगों के प्रति निष्ठावान मित्रता से परिलक्षित हुई हैं। जब कभी भी राष्ट्रीय आपदा आन पड़ी है या संकट की परिस्थिति उत्पन्न हुई है, आपने उनसे निपटने में न केवल अपनी पीढ़ी बल्कि आगे की पीढ़ियों के कलाकारों के लिए भी बढ़-चढ़कर उदाहरण प्रस्तुत किया है। आपने आपदाओं के पीड़ितों के लिए सहायता जुटाने हेतु अनेक स्टार क्रिकेट मैचों, मुम्बई की सड़कों पर कलाकारों के जुलूसों, लाइव मनोरंजन शो की अगुवाई और उनके प्रबंधन का जिम्मा संभाला है। भारत-चीन युद्ध के बाद आप कलाकारों के पहले दल को लेकर ठिठुरती ठंड और एकाकीपन का सामना कर रहे हमारे देश के जवानों को सुकून पहुंचाने सीमावर्ती क्षेत्रों में गए।

5. आपने नेशनल एसोसिएशन ऑव द ब्लाइंड के अध्यक्ष के तौर पर नेत्रहीन लोगों के जीवन में रोशनी भरने के लिए दस वर्षों तक अनवरत् रूप से कार्य किया है। व्यक्तिगत तौर पर दान देने के अतिरिक्त आपने नेत्रहीन छात्रों के लिए ब्रेल पुस्तकें और अन्य शिक्षण सहायक सामग्रियां खरीदने के लिए प्रत्येक वर्ष निधियां जुटाने का कार्य किया है। आप एनएएसईओएच (नेशनल एसोसिएशन ऑव सोसाइटी फॉर इक्वल ऑपॅच्युन्टि फॉर दि हैंडीकैप्ड), वार विडो एसोसिएशन तथा संघर्ष से जूझ रहे बोस्निया के पीड़ितों, पेशावर में फातिमीद फाउंडेशन ब्लड डोनेशन सेंटर, लाहौर में शौकत खानुम चैरिटेबल हॉस्पिटल के लिए दान तथा विभिन्न देशों और भारत में अनेक धर्मार्थ कार्यों जैसे अनेक परोपकारी कार्यों से जुड़े रहे हैं।

6. आपने महाराष्ट्र सरकार को फ़िल्म जगत के लिए अनन्य रूप से एक फ़िल्म सिटी की व्यवस्था करने का पहला प्रस्ताव दिया था और राज्य सरकार से फ़िल्म सिटी के लिए भूमि आबंटित किए जाने का अनुरोध निरंतर करते रहे। इसी प्रकार से आपने शहर के शेरिफ़ के अपने कार्यकाल के दौरान स्वर्गीय श्री रजनी पटेल के साथ मिलकर मुम्बई में नेहरू केन्द्र के भवन का प्रस्ताव रखा ताकि विज्ञान और कला के क्षेत्र में अग्रणी शहर में एक ही छत के नीचे विज्ञान और कला, मंच साझा कर सकें।

7. आपको अनेक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। आपको दाग, आज़ाद, देवदास, नया दौर, कोहिनूर, लीडर, राम और श्याम तथा शक्ति के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार प्राप्त हुआ है। आपको वर्ष, 1991 में पद्म भूषण, वर्ष, 1995 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार, वर्ष, 1997 में पाकिस्तान का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार निशान-ए- इम्तियाज़, सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में योगदान हेतु वर्ष, 1998 में रामनाथ गोयनका पुरस्कार, साम्प्रदायिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता के लिए वर्ष, 2000 में राजीव गांधी सदभावना पुरस्कार आदि से भी सम्मानित किया जा चुका है।